[Mr. Chairman]

should be decided by an impartial tribunal on the principles of justice and equality.'" (5)

*Lok Sabha divided:*

**Division No. 2[illegible]]** **[16.28 hrs.**

## AYES

Banerjee, Shri S. M.
Limaye, Shri Madhu
Mate, Shri J.
Warior, Shri

## NOES

Akkamma Devi, Shrimati
Alva, Shri Joachim
Aney, Dr. M. S.
Balakrishna, Shri
Bhakt Darshan, Shri
Bhanja Deo, Shri L. N.
Chaudhry, Shri Chandramani Lal
Chaudhuri, Shrimati Kamala
Chavda, Shrimati Johraben
Chuni Lal, Shri
Daljit Singh, Shri
Das, Shri B. K.
Deo Bhanj, Shri P. C.
Dubey, Shri R. G.
Harvani, Shri Ansar
Jadhav, Shri Tulshidas
Jagjivan Ram, Shri
Kajrolkar, Shri
Kappen, Shri
Kedaria, Shri C. M.
Khadilkar, Shri
Khanna, Shri P. K.
Kindar Lal, Shri
Kripa Shankar, Shri
Lalit Sen, Shri
Laskar, Shri N. R.
Malaviya, Shri K. D.
Maniyangadan, Shri
Matcharaju, Shri
Mehrotra, Shri Braj Bihari
Mishra, Shri Bibhuti
Mukane, Shri
Muthiah, Shri
Pattabhi Raman, Shri C. R.
Ram Sewak, Shri
Ranga, Shri
Ranga Rao, Shri
Rao, Shri Jaganatha
Samanta, Shri S. C.
Sharma, Shri A. P.
Shashi Ranjan, Shri
Shinkre, Shri
Shukla, Shri Vidya Charan
Sidheswar Prasad, Shri
Sinha, Shrimati Ramdulari
Sinhasan Singh, Shri
Snatak, Shri Nardeo
Subbaraman, Shri
Swamy, Shri M. P.
Thengal, Shri Nallakoya
Tiwari, Shri K. N.
Tiwari, Shri R. S.
Vidyalankar, Shri A. N.
Wadiwa, Shri

**Mr. Chairman:** The result of the division is: *Ayes* 4; *Noes* 53.

*The motion was negatived.*

**Mr. Chairman:** There is another substitute motion No. 6 which has been moved by Shri Muthiah. Shall I put it to the vote of the House?

**Shri Muthiah:** I withdraw my motion.

**Mr. Chairman:** Has the hon. Member leave of the House to withdraw his substitute motion?

*The substitute motion was, by leave, withdrawn.*

**Mr. Chairman:** I shall now put amendment No. 4 to the vote of the House. The question is:

That in the resolution,—

*after* "communalism" *insert*—
"intolerence towards minorities."

*The motion was negatived.*

**Mr. Chairman:** Now, I put the resolution to the vote of the House. The question is:

"This House is of opinion that with a view to make India nationally and emotionally integrated, necessary steps be taken to eradicate all disintegrating forces, namely, communalism, casteism, regionalism, narrow linguism, etc., from every walk of our life.".

*The motion was adopted.*

---

**16.31 hrs.**

## RESOLUTION RE: ADMINISTRATIVE REFORMS

**श्री विभूति मिश्र** (मोतिहारी): सभापति जी, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"इस सभा की राय है कि देश में तत्काल समाजवाद लाने के लिए और पंच-वर्षीय योजना के सफल निष्पादन के लिए सरकार को अपने प्रशासनिक

ढांचे में अविलम्ब आमूल परिवर्तन करने चाहियें।"

मेरा यह प्रस्ताव बहुत ही महत्वपूर्ण है और खास तौर पर इस समय इसकी बहुत आवश्यकता है। अठारह वर्ष की स्वाधीनता के बाद आज ऐसा लगता है कि देश की प्रगति और विकास के लिए जितना काम हम करना चाहते थे, वह हम नहीं कर पाए हैं। इसका नतीजा यह है कि हम अपने देश में विद्यमान कठिनाइयों और समस्याओं का समाधान नहीं कर सके हैं। जहां तक मैं समझता हूं, इसका कारण यह है कि हमने अंग्रेजों से स्वाधीनता क्रान्ति के द्वारा प्राप्त नहीं की, बल्कि हम ने स्वाधीनता प्राप्त की सुलह और समझौते से। इस अवस्था में अंग्रेजों ने हम लोगों को राज्य सौंपते समय हिन्दुस्तान का बंटवारा कर दिया और देश का जो भाग हम लोगों के हाथ आया, उसमें उन्होंने यह शर्त लगाई कि उस समय जो उनके हुक्काम और कारकुन थे, अगर उन्होंने स्वाधीनता की लड़ाई के दौरान अंग्रेज का साथ दिया हो और हमारी स्वाधीनता की....

**Shri S. M. Banerjee** (Kanpur): Sir, I raise a point of order. It is this. I fully agree with the contents of the resolution of Shri Bibhuti Misra. But you are aware that the Administrative Reforms Commission has been already appointed. Now that this resolution has been moved by the hon. Member, let it be postponed for the next session. Let him move this; it might stop here. Otherwise, we might prejudice the functioning of the Commission. Therefore, my submission is that you may kindly think it over: whether such a discussion will help the Administrative Reforms Commission or whether the discussion could be postponed to a later date.

**Mr. Chairman:** The hon. Member has moved the resolution. He has started his speech. Let him speak and then we shall see.

**Shri Shinkre (Marmagoa):** My submission is even if the resolution is adopted, what will be its affect or its result

**Mr. Chairman:** At the present moment we cannot say anything; it is only being moved now. Let us hear the Mover and then we will see.

**श्री बिभूति मिश्र** : सभापति महोदय, मैं यह कह रहा था कि हमको राज्य सौंपते समय अंग्रेजों ने यह शर्त लगाई कि उनके जिन हुक्काम और कारकुनों ने हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई के विरुद्ध कार्य किया हो, तो भी हिन्दुस्तान की नई सरकार उनके खिलाफ कोई कार्यवाही न करे। अंग्रेजों ने उन सरकारी हुक्काम, आई० सी० एस०, आई० पी० एस० और क्लास 1, 2 तथा 3 के अधिकारियों को—क्लास 4 को मैं नहीं लेता—केवल इसलिए नियुक्त किया था कि वे इस देश में अंग्रेजी राज्य को अच्छी तरह से चलायें और यहां अंग्रेजों की प्रभुता को बनाए रखें। आप को याद होगा कि इन आई० सी० एस० और अन्य सर्विसों के लोग कई बार डेलीगेशन्ज में विलायत जाते थे और वहां की सरकार को कहते थे कि अगर आप हिन्दुस्तान को स्वाधीनता दे देते हैं तो हमारा क्या होगा। हमको याद है कि हमारे ही सूबे के एक अधिकारी यह वकालत करने के लिए गए थे कि हिन्दुस्तान को स्वाधीनता न दी जाये।

**एक माननीय सदस्य** : उनका नाम क्या है?

**श्री बिभूति मिश्र** उनके नाम से हमें कोई मतलब नहीं है।

स्वाधीनता के बाद इस तरह की स्थिति उत्पन्न हुई कि अंग्रेजों के जमाने में राज्य को बचाने के लिए जो कालोनियल सर्विस रखी गई थी, उसने प्रशासन के ढांचे में ठीक तरह से फिट इन नहीं किया, जिस का नतीजा यह है कि हमारा राजकाज अच्छी

[श्री विभूति मिश्र]

तरह से नही चल सका है । हमारे दोस्त, श्री मालवीय बैठे हुए हैं । प्लानिंग की कनसल्टेटिव कमेटी में मैंने उनको कहा कि लैंड रिफार्म्ज के सैमिनार की जरूरत नहीं है, बल्कि हमने लैंड रिफार्म्ज का जो उसूल कायम किया है, उसको कार्यान्वित करना चाहिए, न कि सैमिनार पर पैसा बर्बाद करना चाहिए । वह मेरे परम मित्र है, लेकिन वह मेरी बात नहीं माने । फिर मैंने उनको एप्पलबी रिपोर्ट से पढ़ कर सुनाया कि जो, लिट्ल-माइंडिड आई० सी० एस० लोग हैं, उनसे काम नहीं हो सकता है । आप जानते हैं कि हमारे पटेल साहब कोई प्रोफेसर का दिमाग नहीं रखते थे और यद्यपि वह बैरिस्टर थे, लेकिन उनका साधारण दिमाग था । उन्होंने जो काम करके दिखाया है, वह किसी और से होना मुश्किल है । इसी कारण से हमारे आई० सी० एस० और अन्य सर्विस के लोगों से हमारे प्रशासन, विकास और गांवों तथा कारखानों की पैदावार बढ़ाने का काम नही हो सका ।

आपको याद होगा कि कुछ वर्षों की स्वाधीनता के बाद रूस ने हिटलर जैसे दुश्मन का मुकाबला किया और इस तरह से मुकाबला किया कि हिटलर के हरा कर दुनिया में समाजवाद के नारे और नाम को कायम रखा । ऐसा क्यों हुआ ? इसका कारण मैं आपको लेनिन की किताब "स्टेट एंड रेवोल्यूशन" से पढ़ कर सुनाता हूं ।

"After the revolution the State machinery should be smashed."

The meaning is that the new administrative apparatus for the execution of new goods and new society is needed.

The old civil service's outlook and attitude is not helpful. They lack initiative and no responsibility is fixed. Idealogically they are hostile to the goal of socialist society. They come from upper classes and upper castes. Their main aim is to eat, drink and make merry.

लेनिन ने जब राज्य लिया तो उसने सब पुराने हुक्काम को हटा कर नये नये आदमियों को रखा, जिन को नई सोशल वैलयूज और आर्थिक नीति पर आधारित देश और राज्य का निर्माण करने में विश्वास था । इसी का नतीजा है कि आज रूस दुनिया में अव्वल नम्बर पर है ।

इस के विपरीत जब हमने स्वधानीता प्राप्त की, तो उन्हीं पुराने आदमियों को रखा । हमारे जब आई० सी० एस०, अन्य सर्विसिज के अधिकारी और हमारे राज्य-तंत्रका संचालन करने वाले जो लोग थे, वे चाहते थे कि राज-काज चलता रहे और हम आराम से रहें । इसका कारण यह है कि हमारे राज्य-तंत्र में लोअर मिडिल क्लास के लोगों, नीचे के लोगों, लोवर स्ट्रेटा के लोगों को नहीं लिया गया । इसी का नतीजा यह हुआ है कि आज तक हम किसी भी प्लान में, किसी भी काम में ; उस हद तक सफलीभूत नहीं हो सके, जिस हद तक हम आशा करते थे । हमारे नेता जवाहर-लाल नेहरू ने जो योजना बनाई थी, पहली योजना, दूसरी योजना, तीसरी योजना, जो अब 31 मार्च को खत्म होने जा रही है, लेकिन इन योजनाओं को काम में कौन लायेगा । वह मशीनरी तो हमारे हाथ में होनी चाहिये, वह मशीनरी आज हमारे हाथ में नहीं रही । जिसका नतीजा हुआ कि हम को इस योजना के द्वारा खाने-पीने के मामलों में अभी तक पूरी स्वाधीनता नहीं हो पाई है । हम को अभी तक सब को शिक्षा देने की स्वाधीनता प्राप्त नहीं हो सकी है, ताकि हम सब को फ्री एजूकेशन दे सकें । हम को दवा दारू में इतना सामान मिल सका कि सब को हम दवा-दारू दे सकें पर कई मामले में इतने मकान नहीं बना सके कि बे-घरवाले को मकान दे सकें,

और ये पांचों चीजें समाजवाद के लिये बसिक चीजें हैं । इन पांचों चीजों को 18 वर्ष के बाद भी आज हम सब को नहीं दे सके ।

चैयरमैन साहिब, हिन्दुस्तान जो सामान पैदा करता है, अगर हम उनकी कैलोरीज का बटवरा 2300 कैलोरीज में कोई आदमी जिन्दा रह सकता है, अगर उस 2300 कैलो-रीज का बंटवारा करें तो पांच करोड़ आदमी ऐसे होंगे जिनको कुछ नहीं मिलेगा, जो कि मर जायेंगे वगैर खाये-पीये । यह पैदावार की हालत है । घर की हालत यह है कि बहुतों के पास रहने को घर नहीं है, शिक्षा की कौन पूछे। जिसको शिक्षा मिलती है, शिक्षा मिलती है थोड़े से ऊपर के आदमियों को, जो आई० सी० एस० हैं उन के बच्चों को या जो आई० सी० एस० हो रहे हैं, उनके बच्चों को । सेठ, साहूकार, पुराने जमीदार और इसी क्लास के हमारे देश के चाहे किसी भी पार्टी के नेता, चाहे कांग्रस पार्टी के नेता हों, चाहे कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता हों, इन में जो अपर के स्टेटस के आदमी हैं, इनके बच्चे पब्लिक स्कूलों में सेन्ट एन्ज वियर में पढ़ते हैं, लेकिन आम आदमी के नहीं पढ़ते हैं। इसका कारण यह है कि जो शिक्षा पद्धति आज हम ने अपने यहां चलाने के लिये रखी है, उस के लिये एक्शन–ओरियन्टेड आदमी नहीं मिले । नतीजा यह हुआ कि आज 18 वर्ष के बाद हमारे ऊपर दो हमले हुए — एक चीनी हमला हुआ, उस चीनी हमले का हम मुकाबला नहीं कर सके । दूसरा हमारे ऊपर पाकिस्तान का हमला हुआ । हम खुशी मनाते हैं लेकिन जरा सोचिये 45 करोड़ आबादी हमारी है और 10 करोड़ आबादी पाकिस्तान की है । रेशियों के हिसाब से देखिये, 700 वर्गमील पर हमने कब्जा किया और 192 वर्गमील पर उसने कब्जा किया था । 45 करोड़ के सामने 10 करोड़ की कोई कीमत नहीं है । इसका क्या कारण? । इसका कारण यह है कि हमारी जो मशीनरी है, जो शिक्षण पद्धति है वह राज के लायक नहीं है । इस का यह भी कारण है कि हम ने इन आराम तलब लोगों को, इन आऊट-डेटेड लोगों को इस काम के लिये रखा, और साथ ही हमारे नेता भी उसी मिजाज के थे । हमारे देश में अंग्रेजों के जाने के बाद शासन तन्त्र का जो ढ़ूआ हमारी पार्टी के नताओं पर पड़ा, वे भी उसी क्लास के आदमी थे और हमारी पार्टी में भी जो आम आदमी हैं उनको राजतन्त्र में आगे का मौका नहीं मिला । रूस में क्या हुआ ? रूस ने इन लोगों को हटाया, और हटाकर के आम आदमियों को लिया, उन्होंने उत्साह से काम किया और उत्साह से काम करके दुनिया को दिखला दिया । चैयरमैन साहब, आज चन्द्रमा पर उसका जहाज उतर रहा है, हो सकता है कि कुछ समय के बाद चन्द्रमा पर वह कब्जा कर लेगा । इसलिये जरूरत इस बात की है कि जो हमारा शासन यन्त्र है, उस में परिवर्तन की सख्त जरूरत है ।

हमारे यहां एक भाई ने हमसे बतलाया, शायद बैनरजी साहब चले गये, उन्होंने कहा कि जय देसाई कमिशन बना है तो इसकी क्या जरूरत है ।

**श्री स० मो० बनर्जी** : मैं बैठा हूं ।

**श्री विभूति मिश्र** : हमारी बात को सुनिये । और दो भाईयों ने भी पूछा था तो मैं बताना चाहता हूं कि देसाई कमीशन जो बना है, यह तीन चीजों पर जांच-पड़ताल नहीं करेगा । एक तो पी० एण्ड टी० पर जांच पड़ताल नहीं करेगा, दूसरे डिफेन्स पर जांच पड़ताल नहीं करेगा, तीसरे एक्सटर्नल एफे-यर्स पर जांच पड़ताल नहीं करेगा और चौथा मैं भूल रहा हूं, लेकिन तीन तो निश्चित है । तो इस स्थिति में मैं पूछता हूं अपने उन मित्रों से कि हमारा प्रस्ताव जायज है या नाजायज है ।

**श्री स० मो० बनर्जी** : बिल्कुल नाजा-यज नहीं कहा है ।

**श्री विभूति मिश्र** : जब आप बोले तो मैं नहीं बोला, अब आप मेरी बात सुनिये । ये कहते थे कि मेरा प्रस्ताव पेश हो जाय और पेश हो जाने के बाद इस प्रस्ताव को अगले सेशन में लिया जाय, क्योंकि देसाई कमीशन बहाल हो गया है । मैं पूछना चाहता हूं कि देसाई कमीशन इन तीन चीजों पर ध्यान नहीं देगा क्योंकि यह उनके जूरिडिक्शन से बाहर की बात है, लेकिन हमारा प्रस्ताव इन सब चीजों को कवर करता है । इसलिये मेरा प्रस्ताव जायज है और मेरा प्रस्ताव इसी समय पास होना चाहिए और इससे देसाई कमीशन को मदद ही मिलेगी।

**सभापति महोदय** : कितना वक्त लेंगे ।

**श्री विभूति मिश्र** : तीस मिनट तक तो सब लोगों को समय मिलता ही है, उस में जो बाधायें लोगों ने की हैं, उनको और शामिल कर लीजिये ।

चीनी हमले के वक्त, चैयरमैन साहब, हमारे एक जैनरल साहब की बात चली थी, कुछ इन्क्वायरी भी हुई, रिपोर्ट भी आई, लोग कहते है कि वहां से भाग गये, जो हो, भगवान जाने क्या बात थी । रिपोट हमें देखने सुनने को नहीं मिली, लेकिन थोड़ा सा धक्का लगा, इतना ज्यादा लगा कि हमारे नेता जवाहर लाल जी, मैं समझता हूं कि उसी तकलीफ़ से वह जल्द से जल्द गुजर गये । आज इस बात की जरूरत है कि सब जगहों पर हमको अपने प्रशासन में जल्द से जल्द परिवर्तन करना चाहिये । हम ऐसा परिशासन बानयें जो देश की आवश्यकताओं को पूरा करे । यदि हमने ऐसा नहीं किया तो हमारा प्रशासन कमजोर पड़ता जायेगा । 18 वर्ष के बाद भी आज इन चीजों में कमी रह गई है । सरकार ने देसाई कमीशन को बहाल कर दिया है, यह चीज हम लोगों ने अंग्रेजों से सीखी है । एक एडवाईजरी कमेटी के बाद दूसरी को बहाल करते हैं, तीसरी को करते हैं, चौथी को करते हैं, फिर श्री एपलबी सात समुद्र पार से आये, रिपोर्ट दी, एक मैनन कमेटी की रिपोर्ट निकली, टी० टी० कृष्णमाचारी कमेटी की रिपोर्ट निकली, तीन-चार रिपोर्टें हमारे पास हैं, इतनी रिपोर्टें होने के बाद भी हमारी सरकार ने एक और कमीशन को बहाल कर दिया । पता नहीं कुछ लोगों को प्रभावित करने के लिये कमीशन बनाये जाते हैं, किस काम के लिये बनाये जाते हैं, कमीशन बने तो सारे यन्त्र को देखने के लिये बने । इस समय तीन-चार ऐसे यन्त्र हैं जिनका देखा जाना बहुत जरूरी लेकिन उनके कामों को यह कमीशन नहीं देखेगा ।

एक्सटर्नल अफेयर्स मिनिस्ट्री में आज बड़ा खर्च होता है । एक देश का हम को भी अनुभव है । मैं विलायत गया था । मैंने देखा कि जितना वहां खर्च होता है, उतना शायद ये बीकानेर के महाराज बैठे हैं, इनके यहां भी खर्च नहीं होता होगा । मैंने इनका भी घर देखा है । जितना विलायत में एक्सटर्नल मिनिस्ट्री का खर्च है उतना राजा-महाराजाओं का भी खर्च नहीं है और इस पर जांच पड़ताल होनी चाहिये । यहां गरीब का पैसा लगता है । चेयरमैन साहब, हमारे नेता महात्मा गांधी का नाम मोहन दास कर्मचन्द गांधी था । जब वह हमारे जिले में गये तो उनको कर्मवीर गांधी कहा जाता था । उन कर्मवीर गांधी नाम उनके काम करने की वजह से पड़ा, वह काम करते थे लेकिन हम काम नहीं करते हैं । इसलिये मैं चाहता हूं कि सरकार को अपने यन्त्र में ऐसा सुधार करना चाहिये कि जो यन्त्र जल्द से जल्द जवाब दे सके और दूसरे स्ट्रेक्चर हमारा ऐसा होना चाहिये कि जो स्ट्रेक्चर एक्शन-ओरियेन्टेड हो । तीसरी बात यह है कि जो आदमी आवे वह उसी क्लास के आवे जिस क्लास की सेवा हमें करनी है हम को गरीबों की सेवा करनी है । हमारे यहां बड़े-बड़े सेठ, साहुकार, धनी लोग आ जाते हैं, तो इन से हमारा राजतन्त्र नहीं चलता है । मालवीय जी जा रहे

हैं, ये गरीब क्लास के हैं। जो राजतंत्र है, यह मेरी पार्टी के हाथ में है, कांग्रेस पार्टी के हाथ में है। मैं शुरू से ही कांग्रेस का सदस्य रहा हूं मरने तक इस का सदस्य बना रहूंगा चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय। 1920 में मैं इस में शामिल हुआ था। लेकिन मुझे यह कहते हुए दुख होता है कि आज भी राजतंत्र राजाओं, महाराजाओं, सेठों, साहुकारों, वकीलों, डाक्टरों, प्रोफेसरों इत्यादि के हाथ में है। जनसाधारण के हाथ में नहीं है इन में बहुत से ऐसे लोग हैं जो शहरो में रहने वाले हैं। इनको गांवों का कुछ भी पता नहीं है। इनको यह पता नहीं है कि गांवों में क्या होता है, वे कैसे होते हैं? यहां आकर वे हमारे मिनिस्टर बन जाते हैं, बहुत बड़ी बड़ी जगहों पर जाकर आसीन हो जाते हैं उनको आप इन जगहों तक पहुंचायें, इसमें किसी को कोई एतराज नहीं हो सकता है। लेकिन इतना तो आप देखें कि क्या वे इन जगहों पर फिट इन होते हैं या नहीं, क्या जिस पद पर उनको लगाया गया है, उसका अनुभव उनको है या नहीं। मुझे इस बात पर कोई एतराज नहीं है कि अगर इंडस्ट्री का काम है तो वह काम किसी इंडस्ट्रियलिस्ट को सौंप दिया जाए। लेकिन देखने में यह आता है कि खेती की देख भाल का काम ऐसे लोगों के हाथों में सौंप दिया जाता है, जिनके पास न तो कोई खेत होता है, और न ही खेती का उनको कोई अनुभव होता है। ऐसे लोगों को मिनिस्टर बना दिया जाता है। इसका ही यह नतीजा है कि अठारह वर्ष के अनुभव के बाद भी, अठारह बरस के प्रयत्नों के बाद भी हम आगे नहीं बढ़ सके हैं, हमारा देश इस स्थिति में नहीं पहुंच सका है कि वह आगे बढ़ सके।

आप कमिशन वगैरह बेशक बिठायें। लेकिन इस बात को आप देखें कि क्या कमिशन बिठाने की वास्तव में आवश्यकता है या नहीं। किसी को प्रोवाईड करने के लिए आप कमिशन या समितियां न बनायें। इससे पैसा भी जाया होता है और श्रम भी। अगर आप को लोगों को प्रोवाईड करना है तो आप उनके लिए पब्लिक एसाईलम खोल दें, उनको खाने पीने के लिए दे दें, मुझे कोई एतराज नहीं है। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिये कि कोई दिल्ली आया है और उसको चूंकि आप को प्रोवाईड करना है, इस वास्ते कोई समिति या कमिशन आप बना दें। साथ ही साथ मैं यह भी कहना चाहता हूं जो आपका प्रशासनिक यंत्र है वह ऐसा होना चाहिये जो कि आपके जो सिद्धान्त हैं उन में विश्वास रखता हो। आजकल देखने में आता है कि इन सिद्धान्तों में उनका विश्वास नहीं होता है। निष्ठा नहीं होती है। इस तरह से काम नहीं चल सकता है। निष्ठावान आदमियों को आप रक्खें।

मैंने एक बार कहा था कि बी० डी० ओ० जो लोग हैं उनकी आपने बहाली कर दी है। हमारी स्टेट में भी उनकी बहाली गई है। लेकिन उनके पास जायें तो कोई सुनवाई नहीं होती है। गरीब आदमी दिन भर वहां इकट्ठे रहते हैं, वहां बैठे रहते हैं लेकिन बी० डी० ओ० साहब कोई बात उनकी नहीं सुनते हैं। मैंने एक बार कहा था कि ये भी छोटे नवाब हैं। हमारे देश में एक सज्जन हैं, एक कारकुन है, चीफ मिनिस्टर हैं, श्री डी० पी० मिश्र। वह मध्य प्रदेश के चीफ मिनिस्टर हैं। उन्होंने बी० डी० ओज की पोस्ट ही उड़ा दी है।

**श्री के० डी० मालवीय** (बस्ती) : वह भी मिश्र हैं।

**श्री विभूति मिश्र** : वह भी मिश्र है, मैं भी मिश्र हूं। मिश्रों को अक्ल होती है। लोग उनको धन्यवाद देते हैं।

एपलबी रिपोर्ट में पेज 7 पर यह लिखा है :

"This heritage from simpler days points rather in these directions towards the tendency to carelessness and prodigacy."

[श्री विभूति मिश्र]

हमारी इस तरह की हैरीटेज ही कहां रही है कि हम को जनता के लिए काम करना है । जो लोग भरती किये जाते हैं उनकी इस तरह की हैरीटेज ही कहां रहती है । उनमें यह भावना ही कहां रहती है कि उनको जनता के के लिए काम करना है, जनता की सेवा करनी है । अगर कहीं बांध टूट जाता है या किसी गरीब के घर जाना होता है तो ये लोग वहां जाना भी पसन्द नहीं करते हैं । बड़े बड़े राजा महाराजाओं के लड़के, ब्राह्मणों के लड़के गरीबों के घर कैसे जाय, जब यह हैरीटेज ही उनका नहीं होता है । आज भी मैं देखता हूं कि किसी डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के यहां जाना होता है दुख दर्द कहने के लिए तो उसके कमरे के बाहर पर्दा लगा रहता है और बाहर चपड़ासी बैठा रहता है जो कि अन्दर किसी को घुसने नहीं देता है । अगर किसी तरह से उसको वहां जाने का मौका मिल जाता है तो उसकी बात वह सुनता ही नहीं है और बेचारा गरीब आदमी निराश हो कर लौट आता है ।

एपलबी ने अपनी रिपोर्ट के पेज 6 पर यह लिखा है :

"The only objective test of efficiency is survival.".

टैस्ट हमारा क्या है ? कैसे हम सरवाईव करें ? क्या हमारा जो आबजक्टिव था उसको हम अठारह साल में भी प्राप्त कर पाये हैं ? क्या हम अठारह साल के बाद सरवाईव कर पाए हैं । हम खुशियां मनाते हैं कि हमने पाकिस्तान को पीट दिया । लेकिन आप देखें कि उसने 192 वर्गमील हमारी भूमि पर कब्जा कर लिया था । अगर वह एक इंच हमारी भूमि पर भी कब्जा न कर पाता और हम उसकी भूमि पर कब्जा कर लेते तब तो आप कह सकते हैं कि हम सरवाईव कर गए हैं अन्यथा नहीं । तब तो यह कहा जा सकता था कि हमारी एफिशेंसी बढ़ गई है, और यह बात समक्ष में भी आ सकती थी । एपलबी आप देखें कि कहां से आया । कितना पैसा उस पर खर्च हुआ । वह घूमा फिरा । उसने खाया पिया । फिर रिपोर्ट दी । लेकिन हमारी सरकार के दिमाग में उसकी बात बात भी नहीं आई ।

उसने आगे लिखा है :

"At almost all the levels of the public services it seems to be too much assumed that one person of a certain "class" is equal to anotner person of that class.".

एक क्लास के आदमी दूसरे क्लास के बराबर हो जायें यह तो हमारे यहां है ही नहीं । हम लोग किसी के यहां जाते हैं तो वहां पर यह लिखा पाते हैं कि टाईम के बारे में पहले एप्वाईंटमेंट लीजिये । अब आप देखें कि कितने आप के यहां अफसर हैं, कोई अंडर सेक्रटरी है, कोई डिप्टी सेक्रटरी है, कोई ज्वाइंट सेक्रटरी है, कोई एडीशनल सेक्रटरी है, कोई सेक्रटरी है, पता नहीं कितने अफसर है । ये तो एक डिपार्टमेंट में होते हैं । इसका मतलब यह हुआ कि जितने डिपार्टमेंट हैं उतने ही ज्यादा ये अफसर आपके पास हैं । जरूरत इस बात कि है कि शासन तंत्र की आप सिमप्लीफाई करें, काम काज को आप आसान करें और ऐसा प्रोसीजर निकालें जिससे लोगों का दुख दर्द आसानी से दूर हो सकें, लोगों की जो मुश्किलात हैं, उनको आसानी से हल किया जा सके ।

आप यह भी देखें कि हमारे यहां क्या प्रोडक्शन हैं और क्या कंजंप्शन हैं । इसको भी नोट कर लेना जरूरी है कि जितना हम प्रोडक्शन करना चाहते हैं उतना हम प्रोडक्शन नहीं कर पाते हैं । हमारा उत्पादन जरूरत से बहुत कम है । इसके विपरीत हमारी

जो जनसंख्या है वह दिन-प्रति-दिन बढ़ती चली जा रही है । जनसंख्या का भार बढ़ता हुआ चला जा रहा है । उस हिसाब से हमारी पैदावार नहीं बढ़ती है ।

**श्री श० ना० चतुर्वेदी** (फिरोजाबाद) : जनसंख्या की वृद्धि का प्रशासन से क्या सम्बन्ध है ?

**श्री विभूति मिश्र** : मैं आपका ध्यान भीष्म पितामह ने जो कुछ शान्तिपर्व में, महाभारत में कहा है, उसकी ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं । राजा चाहे तो स पृथ्वी को स्वर्ग बना सकता है और अगर चा तो नरक बना सकता है । यह राजा का काम है कि कितने पैदा करने की इजाजत दे और कितने न पैदा करने की इजाजत दे । उसका काम है कि कितनों को खिलाये और कितनों को न खिलाये । चतुर्वेदी जी ब्राह्मण है और ब्राह्मण होकर वह ऐसी बात कहते हैं । महाभारत में क्या लिखा है इसको वह भूल जाते हैं । राजा के ये सब काम है । हमारे देश की पैदावार तो बढ़ती नहीं है खाने वालों की तादाद बढ़ती चली जा रही है । हमारे सुब्रह्मण्यम साहब आ गए है । वह बेचारे क्या कर सकते है । वह कहां से लायें खाने के लिए । अगर मेघ नहीं बरसता है, अगर वर्षा नहीं होती है, अगर सूखा पड़ जाता है तो वह क्या कर सकते है । वह तो खाद दे सकते हैं, बीज दे सकते है । मेघ तो वह नहीं बरसा सकते हैं । लेकिन इतना तो शासन कर ही सकता है कि आबादी हमारी न बढ़े । हम ब्रह्मचर्य रखें, सयम से काम लें । कहने की मतलब यह है कि इस तरह की जो बातें हैं इन पर भी हमारा कंट्रोल नहीं है । अब मैं थोड़े से सुझाव देना चाहता हूं ।

**सभापति महोदय** : मिश्र जी, बात यह है कि जो प्वाइंट आफ आर्डर है, उस को भी हमने डिसकस करना है । इसलिए आप एक आध मिनट में समाप्त कर दें और बाकी जो आपको बोलना है वह आइंदा बोले ।

**श्री विभूति मिश्र** : मैं एक सुझाव तो यह देना चाहता हूं कि जो लोग सरकारी कामकाज करने के लिये रखे जायें उन को ठीक तरह से ट्रेनिंग देने का प्रबन्ध किया जाए । ऐसा करने से वे अपना काम ठीक तरह से कर सकेंगे ।

प्रशासनिक ढांचे को आप राशनाइज करें और जो प्रोसीजर है इस को आप सिम्पल बनायें । जो कारकुन आप रखें वे ऐसे रखें जो निष्ठा से काम करने वाले हों । शोभा बढ़ाने वाले आदमी आप न रखें । आप बड़े बड़े डिग्रीधारी रख लेते हैं । लेकिन आप देखें कि वे काम करने वाले व्यक्ति भी हों । जो जनता की सेवा करने में विश्वास रखते है उन को आप रखें ।

अब मैं रिक्रूटमेंट के बारे में कुछ कहना चाहता हूं । पब्लिक सर्विस कमीशन की मैं इज्जत करता हूं । लेकिन आप यह देखें कि उस में कौन कौन से लोग हैं । बड़े बड़े लोग उस के मेम्बर हैं । गरीबों की तरफ वे देखते ही नहीं हैं । सभी बड़े बड़े लोगों का यही कायदा है । उन के यहां हम लोग नहीं जा सकते है । अगर जायेंगे तो लिख देंगे । कि यह आया था सिफारिश करने के लिये । लेकिन उन के स्टेटस का आदमी, उन के मुकाबले का आदमी जाता है और सिफारिश भी करता है तो कुछ नहीं लिखा जाता है । इस तरह की जो चीज है, यह दुरुस्त होनी चाहियें । बड़े बड़े और धनी वर्ग के आदमी ही उस में नहीं आने चाहियें । उस में नैपोटिज्म के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिये । भाई भतीजावाद वहां नहीं चलना चाहिये । आई० सी० एस० के यहां कोई आई० सी० एस० का अफसर बेरोकटोक जा सकता है और उस का काम भी हो जाता है । घर पर वह जाना चाहे तो घर पर भी जा सकता है । लेकिन हम जैसे लोग नहीं जा पाते हैं ।

अब एक नयी श्रेणी बनी है आई० ए० एस० अफसरों की । ये भी कम्बाइंड आई० सी० एस० की जोड़ तोड़ के हैं । कारण यह है कि ये लोग भी उसी लैंगेमी के हैं । वही इन के

[श्री विभूति मिश्र]

प्रोफैसर रहे हैं। यह बात भी है कि सौ में से अस्सी आई० ए० एस० के अफसर दिन में सोते हैं। किसी आफिस में जा कर आप देख लो। महाभारत में पूछा कि साहब, आदमी क्यों मर गया तो जवाब मिला कि इस लिये मर गया कि दिन में सोया था। हमारे सरकारी नौकर भी दिन में सोते हैं तब उन से क्या फायदा होने वाला है ?

**एक माननीय सदस्य :** रात में काम करें तब क्या हो ?

**श्री विभूति मिश्र :** रात को काम करें तब दिन में सोयें। मैं कहना चाहता हूं कि प्रमोशन तब होना चाहिये जब कोई अच्छा काम करे। जो होशियार आदमी हो उसे प्रमोशन मिलना चाहिये। सर्विस में जो भी अच्छा काम करे, पूरा काम करे उस का प्रमोशन जरूर होगा यह भी होना चाहिये।

एक और बहुत बड़ी बात यह है कि यू० पी० एस० सी० ने जो अंग्रेजी को कायम रक्खा है उस को हटा देना चाहिये। जो रीजनल भाषा हो उस को रखना चाहिये। मैं दावे से पूछना चाहता हूं कि जो अंग्रेजी जानने वाले हैं उन्होंने पिछले अठारह वर्षों में क्या किया ? मैं चेलेन्ज कर के पूछता हूं कि किस फ्रंट पर कुछ काम किया गया है ? फूड फ्रंट पर, एजूकेशन के फ्रंट पर, एग्रीकल्चर के फ्रंट पर सोशलिज्म के फ्रंट पर उन्होंने क्या किया ; अभी हमारे यहां अंग्रेजी का ही राज्य चलता है क्योंकि अंग्रेजी जानने वाला क्लास यह सोचता है कि हम अंग्रेजी जानते हैं इस लिये हमारा काम होना चाहिये। इस लिये मैं कहना चाहता हूं कि यू० पी० एस० सी० के इम्तहान वगैरह जो हैं वह रीजनल लैंग्वेज के मीडियम से होने चाहियें। और इसी तरह से लोगों को बहाली मिलनी चाहिये।

**सभापति महोदय :** अब आप अपनी तकरीर आज बन्द कर दीजिये। आप 28 मिनट ले चुके हैं। आप का जो प्वाइंट आफ आर्डर है उस को भी दूसरे दिन लेंगे।

**Shri S. M. Banerjee:** May I raise a point of order? First, let me state the relevant rule.

**Mr. Chairman:** His speech is not finished yet. On the next day when this item is taken up, this point of order also will be taken up.

**श्री यशपाल सिंह** (कैराना) : मेरा एक अमेंडमेंट भी है।

---

17 hrs.

## FOOD ZONES*

**श्री प्रकाशवीर शास्त्री** (बिजनौर) : सभापति जी, देश की खाद्य स्थिति के खराब होने का मुख्य कारण जहां हमारे देश में खाद्यान्नों का अभाव है वहां उस का एक मुख्य कारण दोष पूर्ण वितरण प्रणाली और खाद्यान्नों को बनावटी दीवारें भी है। केरल की हालत पर अभी दस दिन पहले काम रोको प्रस्ताव उपस्थित करते हुए मैं ने खाद्य मंत्री से कहा था और चेतावनी दी थी कि यदि इस स्थिति को जल्दी नहीं सम्भाला गया तो जो घटनायें केरल में हो रही हैं वह दूसरे प्रान्तों में भी फैल सकती हैं। अभी दो दिन पहले बंगाल विधान सभा और विधान परिषद् में जो दृश्य उपस्थित हुए हैं उन से हमारे खाद्य मंत्री अच्छी तरह परिचित होंगे। इस के साथ अगर अभी भी यह स्थिति नहीं संभाली गई तो मैं दुबारा चेतावनी देना चाहता हूं और कहना चाहता हूं कि जो यह आग केरल या बंगाल में फैली है वह अगर दूसरे प्रान्तों में फैल गई तो यह पार्लियामेन्ट हाउस भी उसकी लपट से बच नहीं सकेगा। देश की स्थिति इतनी खराब होने जा रही है

*Half-An-Hour Discussion.